

## सूरह तगाबुन - 64

## سُورَةُ التَّغَابُنِ

### सूरह तगाबुन के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 18 आयतें हैं।

- इस का नाम इस की आयत 9 में ((तगाबुन)) शब्द से लिया गया है। इस में अल्लाह का परिचय देते हुये यह बताया गया है कि इस विश्व की रचना सत्य के साथ हुई है। तथा नबूवत और परलोक के इन्कार के परिणाम से सावधान किया गया है। और ईमान लाने का आदेश दे कर हानि के दिन से सतर्क किया गया है। और ईमान तथा इन्कार दोनों का अन्त बताया गया है।
- आयत 11 से 13 तक में समझाया गया है कि संसारिक जीवन के भय से अल्लाह और उस के रसूल की आज्ञा पालन से मूँह न फेरना अन्यथा इस का अन्त विनाश कारी होगा।
- इस की आयत 14 से 18 तक में ईमान वालों को अपनी पत्नियों और संतान की ओर से सावधान रहने का निर्देश दिया गया है कि वह उन्हें कुपथ न कर दें। और धन तथा संतान के मोह में परलोक से अचेत न हो जायें। और जितना हो सके अल्लाह से डरते रहें। और अल्लाह की राह में दान करते रहें।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त  
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अल्लाह की पवित्रता वर्णन करती है प्रत्येक चीज़ जो आकाशों में है तथा जो धरती में है। उसी का राज्य है, और उसी के लिये प्रशंसा है। तथा वह जो चाहे कर सकता है।

يَسْبِغْ لَكَ مَائِي السَّمَوَاتِ وَمَائِي الْأَرْضِ لَهُ  
الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ١

2. वही है जिस ने उत्पन्न किया है तुम को, तो तुम में से कुछ काफ़िर है, और तुम में से कोई ईमान वाला है। तथा अल्लाह जो कुछ तुम करते हो

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَمِنْكُمْ  
مُؤْمِنٌ وَاللَّهُ يَمَّا يَعْمَلُونَ بِبَصِيرَةٍ ٢

उसे देख रहा है।<sup>[1]</sup>

3. उस ने उत्पन्न किया आकाशों तथा धरती को सत्य के साथ, तथा रूप बनाया तुम्हारा तो सुन्दर बनाया तुम्हारा रूप, और उसी की ओर फिर कर जाना है।<sup>[2]</sup>

4. वह जानता है जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, और जानता है जो तुम मन में रखते हो और जो बोलते हो। तथा अल्लाह भली-भाँति अवगत है दिलों के भेदों से।

5. क्या नहीं आई तुम्हारे पास उन की सूचना जिन्होंने कुफ़ किया इस से पूर्व? तो उन्होंने चख लिया अपने कर्म का दुष्परिणाम। और उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।<sup>[3]</sup>

6. यह इस लिये कि आते रहे उन के पास उन के रसूल खुली निशानियाँ ले कर। तो उन्होंने कहा: क्या कोई मनुष्य हमें मार्ग दर्शन<sup>[4]</sup> देगा? अतः उन्होंने कुफ़ किया। तथा मुँह फेर लिया और अल्लाह (भी उन से) निश्चिन्त हो गया तथा अल्लाह निस्पृह प्रशंसित है।

خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُورَكُمْ وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ ۝

يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسْرُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِّذَاتِ الصُّدُورِ ۝

أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبُوءُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَبْلُ قَدْ آتَوْا وَبَالَ أَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

ذَلِكَ بِأَنَّهُ كَانَتْ تَأْتِيهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَعَالُوا أَبْشَرٌ لِّهَذَا وَتَنَاكَفَرُوا وَتَوَلَّوْا وَاسْتَعْصَمُوا اللَّهُ وَاللَّهُ غَفِيٌّ حَمِيدٌ ۝

1 देखने का अर्थ कर्मों के अनुसार बदला देना है।

2 अर्थात् प्रलय के दिन कर्मों का प्रतिफल पाने के लिये।

3 अर्थात् परलोक में नरक की यातना है।

4 अर्थात् रसूल मनुष्य कैसे हो सकता है। यह कितनी विचित्र बात है कि पत्थर की मूर्तियों को तो पूज्य बना लिया जाये इसी प्रकार मनुष्य को अल्लाह का अवतार और पुत्र बना लिया जाये, पर यदि रसूल सत्य ले कर आये तो उसे न माना जाये। इस का अर्थ यह हुआ कि मनुष्य कुपथ करे तो यह मान्य है, और यदि वह सीधी राह दिखाये तो मान्य नहीं।

7. समझ रखा है काफ़िरो ने कि वह कदापि फिर जीवित नहीं किये जायेंगे। आप कह दें कि क्यों नहीं? मेरे पालनहार की शपथ! तुम अवश्य जीवित किये जाओगे। फिर तुम्हें बताया जायेगा कि तुम ने (संसार में) क्या किया है। तथा यह अल्लाह पर अति सरल है।
8. अतः तुम ईमान लाओ अल्लाह तथा उस के रसूल<sup>[1]</sup> पर। तथा उस नूर (ज्योति<sup>[2]</sup>) पर जिसे हम ने उतारा है। तथा अल्लाह उस से जो तुम करते हो भली-भाँति सूचित है।
9. जिस दिन वह तुम को एकत्र करेगा एकत्र किये जाने वाले दिन। तो वह क्षति (हानि) के खुल जाने<sup>[3]</sup> का दिन होगा। और जो ईमान लाया अल्लाह पर तथा सदाचार करता है तो वह क्षमा कर देगा उस के दोषों को, और प्रवेश देगा उसे ऐसे स्वर्गों में बहती होंगी जिन में नहरें वह सदावासी होंगे उन में। यही बड़ी सफलता है।
10. और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और झुठलाया हमारी आयतों (निशानियों) को तो वही नारकी हैं जो सदावासी होंगे उस (नरक) में। तथा वह बुरा ठिकाना है।

رَعِمَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَان كُن يُبْعَثُونَ  
بَلَىٰ وَرَبِّي لَتُبْعَثُن ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا  
عَمِلْتُمْ وَذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ٧

فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالنُّورِ الَّذِي أَنْزَلْنَا  
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ٨

يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْحُجَّةِ ذَٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ وَمَنْ  
يُؤْمِن بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ  
وَيُدْخِلْهُ حُجَّتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ  
فِيهَا أَبَدًا ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ٩

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ  
خَالِدِينَ فِيهَا وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ١٠

1 इस से अभिप्राय अन्तिम रसूल मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हैं।

2 ज्योति से अभिप्राय अन्तिम ईश-वाणी कुर्आन है।

3 अर्थात् काफ़िरो के लिये, जिन्होंने अल्लाह की आज्ञा का पालन नहीं किया।



11. जो आपदा आती है वह अल्लाह ही की अनुमति से आती है। तथा जो अल्लाह पर ईमान<sup>[1]</sup> लाये तो वह मार्ग दर्शन देता<sup>[2]</sup> है उस के दिल को। तथा अल्लाह प्रत्येक चीज़ को जानता है।

مَا أَصَابَ مِنْ مُصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ يَهْدِ اللَّهُ قَلْبَهُ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١١﴾

12. तथा आज्ञा का पालन करो अल्लाह की तथा आज्ञा का पालन करो उस के रसूल की। फिर यदि तुम विमुख हुये तो हमारे रसूल का दायित्व केवल खुले रूप से (उपदेश) पहुँचा देना है।

وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَإِنَّمَا عَلَى رَسُولِنَا الْبَلْغُ الْمُبِينُ ﴿١٢﴾

13. अल्लाह वह है जिस के सिवा कोई वंदनीय (सच्चा पूज्य) नहीं है। अतः अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिये ईमान वालों को।

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٣﴾

14. हे लोगो जो ईमान लाये हो! वास्तव में तुम्हारी कुछ पत्नियाँ तथा संतान तुम्हारी शत्रु<sup>[3]</sup> हैं। अतः उन से सावधान रहो। और यदि तुम क्षमा से काम लो तथा सुधार करो और क्षमा कर दो तो वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ وَأَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَكُمْ فَاحْذَرُوهُمْ وَإِنْ تَعَفَّوْا وَتَصْفَحُوا وَتَغْفِرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٤﴾

15. तुम्हारे धन तथा तुम्हारी संतान तो तुम्हारे लिये एक परीक्षा है।

إِنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ وَاللَّهُ عِنْدَ

1 अर्थ यह है कि जो व्यक्ति आपदा को यह समझ कर सहन करता है कि अल्लाह ने यही उस के भाग्य में लिखा है।

2 हदीस में है कि ईमान वाले की दशा विभिन्न होती है। और उस की दशा उत्तम ही होती है। जब उसे सुख मिले तो कृतज्ञ होता है। और दुःख हो तो सहन करता है। और यह उस के लिये उत्तम है। (मुस्लिम: 2999)

3 अर्थात् जो तुम्हें सदाचार एवं अल्लाह के आज्ञापालन से रोकते हों, फिर भी उन का सुधार करने और क्षमा करने का निर्देश दिया गया है।

أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝

तथा अल्लाह के पास बड़ा प्रतिफल<sup>[1]</sup>  
(बदला) है।

16. तो अल्लाह से डरते रहो जितना तुम से हो सके तथा सुनो और आज्ञा पालन करो और दान करो। यह उत्तम है तुम्हारे लिये। और जो बचा लिया गया अपने मन की कंजूसी से तो वही सफल होने वाले हैं।

فَاتَّقُوا اللَّهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَأَسْمِعُوا وَأَطِيعُوا  
وَأَنْفَعُوا خَيْرًا لِّأَنْفُسِكُمْ وَمَنْ يُؤْنَسْ شَرٌّ لِّنَفْسِهِ  
فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝

17. यदि तुम अल्लाह को उत्तम ऋण<sup>[2]</sup> दोगे तो वह तुम्हें कई गुना बढ़ा कर देगा, और क्षमा कर देगा तुम्हें। और अल्लाह बड़ा गुणग्राही सहनशील है।

إِنْ تَقْرَضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضْعِفْهُ لَكُمْ  
وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللَّهُ شَكُورٌ حَلِيمٌ ۝

18. वह परोक्ष और हाज़िर का ज्ञान रखने वाला है। वह अति प्रभावी तथा गुणी है।

عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

1 भावार्थ यह है कि धन और संतान के मोह में अल्लाह की अवैज्ञा न करो।

2 ऋण से अभिप्राय अल्लाह की राह में दान करना है।